ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :– हे सर्वरक्षक आप

भूः :– प्राणों के प्राण, अर्थात् सबको जीवन देने वाले

भुवः :- सब दुःखों के छुड़ाने वाले

स्वः :- स्वयं सुखस्वरुप और अपने उपासकों को सुखों की प्राप्ति कराने वाले हैं ।

तत् :- आप

सवितुः :- सकल जगत् के उत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता

वरेण्यम् :– वरण अथवा कामना करने योग्य ।

भर्गो देवस्य :– सब देवों के देव, सर्वत्र विजय कराने वाले, सबके आत्माओं के प्रकाशक हैं, हम आपका

धीमहि :– ध्यान करते हैं ।

यः :- जो आप

नः :- हमारी

सामवेद

अथर्ववेद

अर्थ :-

- हे सर्वरक्षक आप प्राणों के प्राण, अर्थात् सबको जीवन देने वाले सब दुःखों के छुड़ाने वाले स्वयं सुखस्वरुप और अपने उपासकों को सुखों की प्राप्ति करने वाले हैं । आप सकल जगत् के उत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता वरण अथवा कामना करने योग्य सब देवों के देव, सर्वत्र विजय कराने वाले, आत्माओं के प्रकाशक हैं, हम आपका ध्यान करते हैं । जो आप हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से प्रेरित कीजिए अर्थात् हमें सद् बुद्धि दीजिए ।

ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म्

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँयोरभिस्त्रवन्तु नः ।।

शब्दार्थ

देवीः, आपः :- सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला सर्वव्यापक ईश्वर ।

अभिष्टये :- मनोवाच्छित आनन्द, अर्थात् ऐहिक सुख-समृद्धि के लिए और ।

पीतये :- पूर्णानन्द, अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए ।

नः :- हमको ।

शम् :- कल्याणकारी ।

भवन्तु :- हो, अर्थात् हमारा कल्याण करे । वही परमेश्वर ।

नः :- हम पर ।

शंयोः :- सुख की ।

अभिस्त्रवन्तु :- सर्वदा, सब और से वृष्टि करे ।

सामवेद

अथर्ववेद

ओ३म्

अर्थ:-

सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला सर्वव्यापक ईश्वर मनोवाञ्छित आनन्द, अर्थात् ऐहिक सुख-समृद्धि के लिए और पूर्णानन्द, अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो, अर्थात् हमारा कल्याण करे। वही परमेश्वर हम पर सुख की सर्वदा, सब ओर से वृष्टि करे।

ईश प्रार्थनाः-

हे विभो ! आनन्द सिन्धो ! मे च मेधां दीयताम् ।
यच्च दुरितं दीनबन्धो !
दूरं नीयताम् ।।
चञ्चलानि चेन्द्रियाणि, मानसं मे पूयताम् ।
शरणं याचे तावकोऽहं सेवकोऽनुगृह्यताम् ।।
त्वयि च वीर्यं विद्यते यत् तच्च मयि निधीयताम् ।
याच दुर्गुणदीनता मयि सा तु शीघ्रं क्षीयताम् ।।
शौर्यं धैर्यं तैजसं च, भारते च क्रियताम् ।
हे दयामय ! अयि अनादे ! प्रार्थना मे श्रूयताम् ।।

अथ अंगस्पर्श-मन्त्राः

ओ३म् वाक् वाक् :-इस मन्त्र से मुख का दक्षिण बलवान् रहें ।

ओ३म् प्राणः प्राणः :- इससे नासिका के दक्षिण और वाम भाग,

ओ३म् चक्षुः चक्षु :- इससे दक्षिण और वाम नेत्र,

ओ३म् श्रोत्रं श्रोत्रम् :- इससे दक्षिण और वाम नेत्र,

ओ३म् नाभिः :- इससे नाभि,

ओ३म् हृदयम् :- इससे हृदय,

ओ३म् कण्ठः :- इससे कण्ठ,

ओ३म् शिरः :- इससे शिर,

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम् :- इससे भुजाओं के मूल-स्कन्ध और

ओ३म् करतलकरपृष्ठे :- इस मन्त्र से दोनों हाथों की हथेलियों एवं उनके पृष्ठ भागों को जल से स्पर्श करें ।

शब्दार्थ:-

ओ३म् :- हे सर्वरक्षक परमेश्वर ! आपकी कृपा से

वाक्-वाक् :- मेरी वाणी और रसना,

प्राणः-प्राणः :- मेरी प्राण-शक्ति और नासिका,

चक्षुः-चक्षुः :- मेरे दोनों नेत्र,

श्रोत्रं-श्रोत्रम् :- मेरे दोनों कान,

नाभिः :- मेरी नाभि,

हृदयम् :- मेरा हृदय,

कण्ठः :- मेरा कण्ठ,

शिरः :- मेरा शिर,

बाहुभ्याम् :- मेरी दोनों भुजाएँ,

करतलकरपृष्ठे :- मेरे हाथों की हथेलियाँ और उनके पृष्ठ भाग

यशोबलम् :- स्वस्थ, यशस्वी और बलवान् रहें ।

अर्थ

हे सर्वरक्षक परमेश्वर ! आपकी कृपा से मेरी वाणी और रसना, मेरी प्राण-शक्ति और नासिका, मेरे दोनों नेत्र, मेरे दोनों कान, मेरी नाभि, मेरा हृदय, मेरा कण्ठ, मेरा शिर, मेरी भुजाएँ, मेरे हाथों की हथेलियाँ और उनके पृष्ठ भाग, स्वस्थ, यशस्वी और बलवान् रहें ।

अथ मार्जन-मन्त्राः

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि :- इस मन्त्र से शिर पर,

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः :- इससे दोनों नेत्रों पर,

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे :- इससे कण्ठ पर,

ओ३म् महः पुनातु हृदये :- इससे हृदय पर,

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम् :- इससे नाभि पर,

ओ३म् तपः पुनातु पादयोः :- इससे दोनों पैरों पर,

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि :- इससे पुनः शिर पर और

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र :- इससे सम्पूर्ण शरीर पर जल के छींटे देवें ।

शब्दार्थ :-

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि :- हे प्राणों के प्राण परमेश्वर !

मेरे शिर को पवित्र कर दो ।

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः :- हे दुःख-विनाशक परमेश्वर !

मेरे नेत्रों को पवित्र कर दो ।

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे :- हे सर्वव्यापी, सुखस्वरुप परमेश्वर!

मेरे कण्ठ को पवित्र कर दो ।

ओ३म् महः पुनातु हृदये :- हे सर्वेश्वर और सभी के पूज्य परमात्मन् !

मेरे हृदय को पवित्र कर दो ।

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम् :- हे जग के उत्पाद परमेश्वर!

मेरी नाभि को पवित्र कर दो ।

ओ३म् तपः पुनातु पादयोः :- हे ज्ञानस्वरुप, ज्ञानदाता और दुष्टों को दण्ड

अर्थ :-

हे प्राणों के प्राण परमेश्वर ! मेरे शिर को पवित्र कर दो । हे दुःख-विनाशक परमेश्वर ! मेरे नेत्रों को पवित्र कर दो । हे सर्वव्यापी, सुखुस्वरुप परमेश्वर ! मेरे कण्ठ को पवित्र कर दो । हे सर्वेश्वर और सभी के पूज्य परमात्मन् ! मेरे ह्रदय को पवित्र कर दो । हे जग के उत्पादक परमेश्वर ! मेरी नाभि को पवित्र कर दो । हे ज्ञानस्वरुप, ज्ञानदाता और दुष्टों को दण्ड देनेवाले परमेश्वर ! मेरे पैरों को पवित्र कर दो । हे आकाश के समान सर्वव्यापक परमात्मन् !

अथ प्राणायाम-मन्त्राः

ओ३म् भूः,

ओ३म् भुवः,

ओ३म् स्वः,

ओ३म् महः,

ओ३म् जनः,

ओ३म् तपः,

शब्दार्थ :-

ओ३म् भूः:- हे परमेश्वर ! आप प्राणों के प्राण हैं ।

ओ३म् भुवः :- हे परमेश्वर ! आप सब प्रकार के दुःखों को दूर करने वाले हैं ।

ओ३म् स्वः :- हे परमेश्वर ! आप सुखस्वरुप तथा सभी सुखों के दाता हैं ।

ओ३म् महः :- हे परेम्श्वर ! आप सबसे महान सबसे पूज्य तथा एकमात्र उपासनीय हैं ।

ओ३म् जनः :- हे परमेश्वर ! आप समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले हैं ।

ओ३म् तपः :- हे परमेश्वर ! आप दुष्टों को दण्ड देने वाले तथा ज्ञानस्वरुप हैं

ओ३म् सत्यम् :- हे परमेश्वर ! आप सत्यस्वरुप और अविनाशी हैं । इन सभी गुणों से युक्त हे परमात्मन् ! हम आपकी उपासना करते हैं ।

अर्थ :-

हे परमेश्वर ! आप प्राणों के प्राण हैं । हे परमेश्वर ! आप सब प्रकार के दुःखों को दूर करने वाले हैं । हे परमेश्वर ! आप सुखस्वरुप तथा सभी सुखों के दाता हैं । हे परमेश्वर ! आप महान्, सबके पूज्य तथा एकमात्र उपासनीय हैं । हे परमेश्वर ! आप समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले हैं । हे परमेश्वर ! आप दुष्टों को दण्ड देने वाले तथा ज्ञानस्वरुप हैं । हे परमेश्वर ! आप सत्यस्वरुप और अविनाशी हैं । इन सभी गुणों से युक्त हे परमात्मन् ! हम आपकी उपासना करते हैं ।

अथ अघमर्षण-मन्त्राः

ओ३म् ऋत च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ।। 1 ।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :- हे परमेश्वर ! आपके

अभि+इद्धात् :- ज्ञानमय

तपसः :- अनन्त सामर्थ्य से

ऋतम् :- सत्य-ज्ञान के भण्डार वेद ।

सत्यम् :- सत्त्व-रज-तम-युक्त कार्यरुप प्रकृति ।

च :- और

अधि+अजायत :- पूर्व कल्प के समान उत्पन्न हुए ।

ततः :- हे ईश्वर ! आपके उसी सामर्थ्य से

रात्रीः :- महाप्रलयरुप रात्रि

अजायत :- उत्पन्न हुई

अर्थ :-

हे परमेश्वर ! आपके ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से सत्य-ज्ञान के भण्डार वेद और सत्त्व-रज-तम-युक्त कार्यरुप प्रकृति । और पूर्व कल्प के समान उत्पन्न हुए । हे ईश्वर ! आपके उसी सामर्थ्य से महाप्रलयरुप रात्रि उत्पन्न हुई उसके पश्चात् उसी ज्ञानमय सामर्थ्य से पृथ्वी और अन्तरिक्ष में विद्यमान समुद्र उत्पन्न हुआ, अर्थात् पृथ्वी से लेकर अन्तरिक्ष तक समस्त स्थूल पदार्थों की रचना हुई ।

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ 2 ॥

शब्दार्थ :-

ओ३म् :- हे ईश्वर ! आपने ।

समुद्रात्+अर्णवात्+अधि :- अन्तरिक्ष से पृथ्वीस्थ समुद्र की रचना करने के पश्चात् ।

संवत्सरः :- संवत्सर, अर्थात् क्षण, मुहूर्त, प्रहर, मास वर्ष आदि काल की ।

अजायत :- रचना की ।

वशी :- जग को वश में रखनेवाले ईश्वर ! आपने ।

मिषतः :- अपने सहज स्वभाव से ।

विश्वस्य :- विश्व के ।

अर्थ :-

हे ईश्वर ! आपने अन्तरिक्ष से पृथ्वीस्थ समुद्र की रचना करने के पश्चात् संवत्सर, अर्थात् क्षण, मुहूर्त्त, प्रहर, मास वर्ष आदि काल की रचना की । जग को वश में रखने वाले ईश्वर ! आपने अपने सहज स्वभाव से विश्व के दिन और रात्रि के विभागों, अर्थात् घटिका, पल और क्षण,

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।। 3 ।।

शब्दार्थ :-

ओ३म् :- हे परमेश्वर ! आप ।

धाता :- जगत को उत्पन्न कर – धारण, पोषण और । नियमन करने वाले हैं । आपने अपने अनन्त सामर्थ्य ।

सूर्य-चन्द्रमसौ :- सूर्य और चन्द्रमा, आदि ग्रहों-उपग्रहों को ।

दिवम् :- द्यु-लोक को ।

च :- और ।

पृथिवीम् :- पृथिवीलोक को ।

च :- और ।

अन्तरिक्षम् :- अन्तरिक्षलोक को ।

अथ :- तथा ।

स्वः :- ब्रह्माण्ड के अन्य लोक-लोकान्तरों और ग्रहों-उपग्रहों को तथा उन लोकों

अर्थ :-

हे परमेश्वर ! आप जगत् को उत्पन्न कर – धारण, पोषण और नियमन करने वाले हैं । आपने अपने अनन्त सामर्थ्य से सूर्य और चन्द्रमा, आदि ग्रहों – उपग्रहों को द्यु-लोक को और पृथिवी लोक को और अन्तरिक्ष लोक को तथा ब्रह्माण्ड के अन्य लोक – लोकान्तरों और ग्रहों – उपग्रहों को तथा न लोकों में सुख – विशेष के पदार्थों को पूर्व सृष्टि के अनुसार ही इस सृष्टि में बनाया ।

ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँयोरभिस्त्रवन्तु नः ।।

शब्दार्थ

देवीः, आपः :- सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देनेवाला सर्वव्यापक ईश्वर ।
अभिष्टये :- मनोवाच्छित आनन्द, अर्थात् ऐहिक सुख-समृद्धि के लिए और ।
पीतये :- पूर्णानन्द, अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए ।
नः :- हमको ।
शम् :- कल्याणकारी ।
भवन्तु :- हो, अर्थात् हमारा कल्याण करे । वही परमेश्वर ।
नः :- हम पर ।
शंयोः :- सुख की ।
अभिस्त्रवन्तु :- सर्वदा, सब और से वृष्टि करे ।

सामवेद अथर्ववेद

अथ मनसापरिक्रमा-मन्त्राः

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

शब्दार्थः- योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

अग्निः :- हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर !

प्राचीदिक् :- हमारे सामने जो पूर्व दिशा है उसके अथवा सूर्योदय की पूर्व दिशा के आप

अधिपतिः :- स्वामी हैं। आप

असितः :- बन्धनरहित और

रक्षिता :- सब प्रकार से हमारी रक्षा करने वाले हैं

आदित्याः :- सूर्य-किरणें, प्राण, ज्ञान, अथवा आपके नियम

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं,

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।2।।

शब्दार्थः-

इन्द्रः :- हे परमेश्वर युक्त जगदीश्वर !

दक्षिणादिक् :- हमारे दाहिनी ओर जो दक्षिण दिशा है, आप उसके ।

अधिपतिः :- स्वामी हैं ।

तिरश्चि :- तिर्यक् योनियों के प्राणियों, अर्थात् कीट, पतंग, वृश्चिक, आदि टेढ़े चलने वाले अथवा दुष्ट प्राणियों की ।

राजीः :- पंक्ति से आप हमारी ।

रक्षिता :- रक्षा करने वाले हैं ।

पितरः :- माता-पिता और ज्ञानी लोग ।

इषवः :- बाण के तुल्य हमारे जीवन की रक्षा करते हैं ।

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं ।

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम ।
आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले
परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।3।।

शब्दार्थः-

वरुणः :- हे सर्वोत्तम परमेश्वर !

प्रतीची दिक् :- हमारे पीछे की ओर जो पश्चिम दिशा है, आप उसके ।

अधिपतिः :- स्वामी हैं ।

पृदाकुः :- बड़े-बड़े अजगर सर्प, आदि विषधारी और हिंसक प्राणियों से आप हमारी ।

रक्षिता :- रक्षा करने वाले हैं ।

अन्नम् :- भोज्य-पेय, आदि पदार्थ एवं औषधियाँ ।

इषवः :- बाणतुल्य हैं, जो हमारे जीवन की रक्षा करते हैं ।

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं,

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।4।।

शब्दार्थ :-

सोमः :- हे जगदुत्पादक, शान्ति और आनन्द देने वाले परमेश्वर !
उदीची दिक् :- हमारे बाईं ओर जो उत्तर दिशा है, आप उसके ।
अधिपतिः :- स्वामी हैं। हे परमात्मन् ! आप ।
स्वजः :- अजन्मे और ।
रक्षिता :- सबके रक्षक हैं ।
अशनिः :- विद्युत् , आदि दिव्य शक्तियाँ
इषवः :- बाणतुल्य हैं, जो हमारे जीवन की रक्षा करते हैं ।

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं,

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः

। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो

अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।5।।

शब्दार्थ :-

विष्णुः :- हे सर्वव्यापक परमेश्वर !

ध्रुवा :- हमारे नीचे की ओर जो दिशा है ,

अधिपतिः :- आप उसके स्वामी हैं ।

कल्माषग्रीवः :- जो हरित वर्ण के वृक्षादि ग्रीवा के समान हैं , आप उनके द्वारा हमारी ।

रक्षिता :- रक्षा करते हैं ।

वीरुध :- वृक्षादि वनस्पतियाँ ।

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं,

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। 6 ।।

शब्दार्थ :-

बृहस्पतिः :- हे वाणी, वेदशास्त्र और बृहत् ब्रह्माण्ड के पालक परमेश्वर !

ऊर्ध्वा दिक् :- हमारे ऊपर की ओर जो दिशा है, आप उसके

अधिपतिः :- स्वामी हैं ।

श्वित्रः :- हे ज्ञानमय , मेघस्वरूप परमात्मा आप हमारे रक्षक हैं ।

वर्षम् :- वर्षा के बिन्दु

इषवः :- बाण के तुल्य हैं अर्थात् जल, ज्ञान, आनन्द आदि के

वर्षाबिन्दु दुःख और अज्ञान के नाशक तथा हमारे जीवन की

तेभ्यः नमः :- आपके इन गुणों को नमस्कार करते हैं,

अधिपतिभ्यः नमः :- हे जगत् के स्वामी ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

रक्षितृभ्यः नमः :- हमारी सब भाँति रक्षा करने वाले प्रभु ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

एभ्यःइषुभ्यःनमःअस्तु :- पापियों को बाण के समान पीडा देने वाले परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं ।

यः :- जो कोई अज्ञान स्वरूप ।

अस्मान् :- हमसे ।

द्वेष्टि :- द्वेष करता है ।

यं :- जिस किसी से अज्ञानवश ।

वयम् :- हम ।

अथ उपस्थान मन्त्राः

ओ३म् उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।

शब्दार्थः- **देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।**

ओ३म् :- हे परमेश्वर ! आप ।

तमसः :- सब अविद्या-अन्धकार से ।

परि :- दूर वा पृथक् रहनेवाले ।

स्वः :- आनन्द एवं प्रकाशस्वरूप ।

उत्तरम् :- प्रलय के अनन्तर भी सदैव वर्तमान रहनेवाले हैं ।

उत् :- श्रध्दापूर्वक ।

वयम् :- हम ।

पश्यन्त :- आपको देखते हैं, अर्थात् आपका ध्यान करते हैं । हे ईश्वर!

सूर्यम्   :- सम्पूर्ण जगत् के उत्पादक, प्रकाशक और सञ्चालन करने वाले ।

ज्योतिः   :- ज्ञान स्वप्रकाश स्वरूप ।

उत्तमम्   :- और सर्वोत्तम हैं । हम आपको ही ।

अगन्म   :- प्राप्त हुए हैं, अर्थात् अब हम आपकी ही शरण में हैं, इसलिए अब आप ही हमारे रक्षक हैं ।

ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।

दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।2।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :- हे परमेश्वर आप

जातवेदसम् :- इस संसार और वेद-ज्ञान के जनक

देवम् :- दिव्य-गुण-युक्त देवों के भी देव,

सूर्यम् :- चराचर जगत् के उत्पादक, प्रकाशक और संचालक हैं।

केतवः :- वेद की श्रुतियाँ तथा संसार के रचनादि के नियम ।

त्यम् :- उक्त गुणयुक्त उस=आपको ।

उ :- ही ।

उत :- अच्छी प्रकार ।

वहन्ति :- प्राप्त कराते हैं , अर्थात् आपका ही ज्ञान कराते हैं ।

विश्वाय :- पूर्णरूप से ।

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।।3।।

शब्दार्थ:-

ओ३म् :- हे परमात्मन् ! आप

चित्रम् :- पूज्य, कामना करने के योग्य तथा अद्भुत बल एवं प्रकाशस्वरूप

देवानाम् :- दिव्य स्वभाव वाले विद्वानों के

अनीकम् :- सर्वोत्तम बल तथा

उत्+अगात् :- अच्छी प्रकार आगे ले जाने वाले हैं । आप

मित्रस्य :- राग-द्वेष रहित, मित्र भाव वाले उपासक के, सूर्य लोक और प्राण के

वरुणस्य :- श्रेष्ठ वरणीय उपासक के

अग्नेः :- उत्कृष्ठ ज्ञान वाले

चक्षुः :- दर्शक, मार्गदर्शक और प्रकाशक हैं । हे ईश्वर ! आप

अन्तरिक्षम् :-आकाश आदि लोक-लोकान्तरों को

आ+अप्राः :-बनाकर उसमें व्याप्त होकर धारण और रक्षण करने वाले हैं । आप

सूर्यः :-सकल जगत् के उत्पादक और प्रकाशक

जगतः च तस्थुषः :-चेतन और स्थावर जगत् के

आत्मा :-आत्मा, अर्थात् उसमें व्याप्त होकर उसका सञ्चालन करने वाले हैं ।

स्वाहा :-यह वचन सत्य है अथवा मैं इस सत्य को

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।4।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :- हे परमेश्वर

तत् :- वह=आप

चक्षुः :- सबके द्रष्टा और सबको दृष्टि देने वाले

देवहितम् :- दिव्यगुण-कर्म और स्वाभाव वाले विद्वानों के हितकारी

पुरस्तात् :- सृष्टि से पूर्व , मध्य तथा पश्चात् विद्यमान रहने वाले

शुक्रम् :- शुद्धस्वरूप

उत् चरत् :- उत्कृष्टता के साथ सबके ज्ञाता और सर्वत्र व्याप्त हैं ।

आपकी कृपा से हम

शरदः शतं :-सौ वर्षों तक

अदीनाः :-अदीन=स्वतंत्र, स्वस्थ, समृद्ध और सम्मानित

स्याम :-रहें

च :-और आपकी कृपा से ही

शरदः शतात् भूयः :-सौ वर्षों के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें, सुनें, वेद-उपदेश करें और स्वाधीन रहें, अर्थात् सौ वर्षों के बाद भी हम स्वस्थ, सुखी और स्वतन्त्र रहें, हमारा मन पवित्र रहे और हम आपकी उपासना से सदैव आनन्दित रहें ।

ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :– हे सर्वरक्षक आप

भूः :– प्राणों के प्राण, अर्थात् सबको जीवन देने वाले

भुवः :- सब दुःखों के छुड़ाने वाले

स्वः :- स्वयं सुखस्वरुप और अपने उपासकों को सुखों की प्राप्ति कराने वाले हैं ।

तत् :- आप

सवितुः :- सकल जगत् के उत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता

वरेण्यम् :– वरण अथवा कामना करने योग्य ।

भर्गो देवस्य :– सब देवों के देव, सर्वत्र विजय कराने वाले, सबके आत्माओं के प्रकाशक हैं, हम आपका

धीमहि :– ध्यान करते हैं ।

यः :- जो आप

नः :- हमारी

सामवेद

अथर्ववेद

अर्थ :-

- हे सर्वरक्षक आप प्राणों के प्राण, अर्थात् सबको जीवन देने वाले सब दुःखों के छुड़ाने वाले स्वयं सुखस्वरुप और अपने उपासकों को सुखों की प्राप्ति करने वाले हैं । आप सकल जगत् के उत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता वरण अथवा कामना करने योग्य सब देवों के देव, सर्वत्र विजय कराने वाले, आत्माओं के प्रकाशक हैं, हम आपका ध्यान करते हैं । जो आप हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से प्रेरित कीजिए अर्थात् हमें सद् बुद्धि दीजिए ।

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :- हे ईश्वर दयानिधे !

भवत् कृपया :-आपकी कृपा से

अनेन :-हम द्वारा किये गए इस

जप+उपासना+आदि+कर्मणा :-जप, उपासना, आदि कर्म से

धर्म :-सत्य-न्याय और परोपकार का आचरण करना

अर्थ :- धर्मयुक्त कर्मों से सांसारिक सुख-प्राप्ति के पदार्थों को प्राप्त करना ।

काम :- धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना,

मोक्ष :- समस्त दु:खों, दुर्गुणों, दुष्कर्मों और दुर्जनों से मुक्त होकर सर्वदा आनन्द में रहना है इन चारों की

सिद्धिः :- सिद्धि

नः सद्य भवेत् :- हमें शीघ्र प्राप्त होवे ।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

शब्दार्थः-

ओ३म् :-हे परमपिता परमेश्वर ।

शम्भवाय:-मोक्ष-सुखस्वरुप तथा मोक्ष-सुख देने वाले ।

च :-और

मयोभवाय :-उत्तम सुखस्वरुप तथा संसार के उत्तम सुखों को देनेवाले परमेश्वर !

नमः :-हम आपको नमस्कार करते हैं ।

च :-और ।

च :- और ।

शिवाय :- समस्त दु:खों को दूर कल्याण करने वाले ।

च :- और

शिवतराय :- सब भाँति अत्यन्त कल्याण करने वाले परमेश्वर !

नमः च :- हम आपको बारम्बार, नमस्कार करते हैं ।

इति ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्योपासना) विधिः ।।